UGC Approved, Journal No. 48416 (IJCR), Impact Factor 2.314 ISSN : 2393-8358

Interdisciplinary Journal of Contemporary Research

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 6, No. 5.1 Year-6 May, 2019

PEER REVIEWED JOURNAL

Editor

Dr. Indranil Sanyal

Joint Editors

Dr. Shrabanti Maity **Dr. Avijit Debnath**

PUBLISHED BY

S. K.C. School of English and Foreign Languages

Assam

Mob. 9415388337, Email : ijcrjournal971@gmail.com, Website : ijcrjournal.com

CONTENTS

↪	Opportunities and Problems of Handicrafts Sector in Indian Economy **Neha Gupta & Mansoor Ali**	1-4
↪	The Feminism Reconsidered: A Study of Anita Desai's Novel Cry, The Peacock **Rajesh Kumar**	5-10
↪	भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में फतेहपुर जनपद के गरम दल के युवकों का योगदान **अशोक कुमार**	11-14
↪	जल संसाधन का उचित उपयोग **डॉ0 शिव प्रकाश सिंह**	15-18
↪	लेनिन और मार्क्स एन्जेल्स की भूमिका : राजनीतिक प्रणाली **डॉ0 नवीन पाण्डेय**	19-23
↪	मुक्तिबोध के काव्य में शोषित और पीड़ित वर्ग मार्क्सवाद के विशेष आलोक में **प्रेम चन्द**	24-26
↪	महिलाओं के सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका **विवेक सिंह**	27-32
↪	पर्यावरण एवं बाल–विकास : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन **प्रभात किरण**	33-36
↪	Indo- Sri Lanka Agreement 1987 **Dr. H.L. Sharma**	37-39
↪	सारनाथ के बौद्ध मन्दिरों का सांस्कृतिक अध्ययन **डॉ0 अभय कुमार एवं देवेन्द्र कुमार**	40-42
↪	बौद्ध साहित्य में वर्णित सामाजिक आदर्श के मूल तत्व **डॉ0 कलावती**	43-44
↪	ममता कालिया की कहानियों और स्त्री चेतना **डॉ0 पुष्पलता कुमारी**	45-47
↪	पूर्व मध्यकाल में भारत और अरब के बीच व्यापारिक गतिविधियाँ **नीलेश झा**	48-50
↪	Professionalism and Ethics in Teaching **Prashant Kumar Singh**	51-54
↪	Gandhi's *Swaraj*: A New Notion of Self, State and Sovereignty **Sanjay Kumar & Archana Kumar**	55-63
↪	Tradition of Yarn Preparation in Medieval India **Dr. Anand Kumar Singh**	64-68

➥	संस्कृत बाल साहित्य से इतर बाल साहित्य **डॉ0 अमर जीत**	69-72
➥	स्वतंत्रता पूर्व प्रमुख समाचार पत्रों की रूपरेखा **डॉ0 रजनीश उपाध्याय**	73-76
➥	जल संकट : संरक्षण व समाधान **डॉ0 अमिता श्रीवास्तव**	77-78
➥	समकालीन हिन्दी कविता और कुँवर नारायण **डॉ0 विदुषी आमेटा एवं मंजु ढुल**	79-82
➥	स्ववित्तपोषित शिक्षक–शिक्षण संस्थानों का महत्व और सामुदायिक विकास **डॉ0 संजय कुमार राना**	83-86
➥	Marital Rape in India: Problem or Culture **Dr. Neha Chaudhary**	87-92
➥	Foreign Investment in India Since 1991 **Dr. Ravindra Kumar Sharma**	93-98
➥	डॉ0 शिवप्रसाद सिंह के कथा साहित्य में समकालीनता **अशोक कुमार सिंह एवं डॉ0 ललित कुमार सिंह**	99-102
➥	सुरेंद्र वर्मा के नाटक ''आठवां सर्ग'' का वैचारिक विश्लेषण **शैलेश कुमार राय**	103-104
➥	निज़ामाबाद के काले मृण्मय पात्रों पर अंलकरण एवं सांस्कृतिक चेतना **डॉ0 ब्रह्म स्वरूप**	105-107
➥	महाराष्ट्र में अभंग **डॉ0 अपूर्व रंगप्पा**	108-110
➥	सुभाष चन्द्र बोस : दलीय कार्यक्रम और फारवर्ड ब्लाक एवं आजाद हिन्द फौज **डॉ0 जया**	111-115
➥	Communal Harmony and Equity: The Gandhian Way **Dr. Ziyauddin & Dr. Rajeev Kumar Singh**	116-122
➥	Concept of Sustainable Development and Smart Cities **Dr. Kailash Nath Singh**	123-128
➥	मराठी और नेपाली साहित्य में रामभक्ति **अमित थापा**	129-132
➥	भारतीय राजनीति में सुशासन की अवधारणा और उभरती हुई नवीन चुनौतियां **कमलेश कुमार**	133-136
➥	भारत–पाक संबंधों पर आधारित समकालीन हिंदी फिल्में **उन्मेषा कोंवर/डॉ0 अनुशब्द**	137-140

UGC Approved Journal No. 48416 *Impact Factor : 2.314*
Interdisciplinary Journal of Contemporary Research, Vol. 6, No. 5.1, May, 2019 *ISSN : 2393-8358*

भारत-पाक संबंधों पर आधारित समकालीन हिंदी फिल्में

उन्मेषा कोंवर / डॉ. अनुशब्द
हिंदी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय, असम

सन 1947 में दो अलग-अलग राष्ट्रों के रूप में भारत और पाकिस्तान को ब्रिटिश शासन से आजादी मिली। भारत उपमहाद्वीप में सदियों से मिलजुलकर रह रहे दो प्रमुख संप्रदायों को आधार बनाकर विभाजन की नींव डाली गयी। भारत और पाकिस्तान दोनों ही मुल्कों पर विभाजन के अनेक दुष्प्रभाव पड़े। दोनों देश शरणार्थी समस्या से लेकर सीमा विवाद तक अनेक छोटी-बड़ी समस्याओं से जूझ रहे थे। दोनों देशों के जनता के बीच भावनात्मक स्तर पर एक गहरी खाई खोद दी गयी थी, जो बढ़ते समय के साथ-साथ और भी गहरा होता गया। भारत-पाक विभाजन का सिद्धांत एक तत्कालीन सिद्धांत था। सु-परिकल्पित न होने के कारण इसका असर राजनीति, समाज सभी पर पड़ा। भारत-पाक विभाजन के बाद दोनों देशों में मैत्री लाने के उद्देश्य से काफी आलोचनाएँ की गयी। वर्तमान समय में भी भारत और पाकिस्तान के बीच मैत्री स्थापित करने की अनेक कोशिश जारी है।

सिनेमा समाज का एक ऐसा अंग है जिसे जनजीवन से अलग नहीं किया जा सकता। समाज के अलग-अलग दृश्यबिंब, जाति के रंग रूप सिनेमा के सहारे उभरकर सामने आता है। सिनेमा की विकास यात्रा रंगमंच से, साहित्य से, लोकगीतों तथा लोकपरंपराओं से होते हुए आधुनिक समय में विज्ञान के शिखर तक फैली हुई है। साहित्य में यथार्थवाद जिस प्रकार एक नया विषय नहीं है उसी तरह सिनेमा भी यथार्थ का ही मूर्त रूप है। व्यावसायिक उद्देश्य से कल्पना का रंग लगाने पर भी सिनेमा यथार्थ के अति निकट होता है। भारतवर्ष के इतिहास की सबसे त्रासद घटना भारत-पाक विभाजन को भी हिंदी सिनेमा ने अपना उपजीव्य बनाया है। विभाजन की त्रासदियों का गहन और संवेदनात्मक चित्रण इन फिल्मों में किया गया है।

विभाजन पर आधारित फिल्मों में पहला नाम सन 1993 में निर्मित फिल्म 'सरदार' का लिया जा सकता है। यह एक जीवनीमूलक फिल्म है। फिल्म में भारत-पाकिस्तान के विभाजन से पूर्व और बाद की परिस्थितियों का चित्रण किया गया है। भारत विभाजन के पश्चात देशी रियासतों को भारत में शामिल करने और कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक जोड़कर आजाद भारत के निर्माण करने में वल्लभभाई पटेल के योगदान की कहानी ही फिल्म की कहानी है। फिल्म में सत्याग्रह आंदोलन, शरणार्थी समस्या, विभाजन के दौरान की गयी आलोचनाओं, अनशन, गांधी हत्या, आदि को भी स्थान दिया गया है।

सन् 1994 में निर्मित फिल्म 'मम्मो' में भारत-पाक विभाजन की त्रासदी को संवेदनात्मक रूप में चित्रित किया गया है। फिल्म की कहानी एक ऐसी स्त्री पर केंद्रित है, जो भारत विभाजन के समय पाकिस्तान चली गयी थी। उसका नाम था 'मम्मो'। पाकिस्तान में पति के मृत्युपरांत मम्मो बिल्कुल अकेली पर जाती है। वह भारत में अपने सगे-संबंधियों के पास आना चाहती है, लेकिन कानून इसमें बाधा बन जाती है। मम्मो को अब अपने ही जन्मस्थान में आकर रहने की इजाजत नहीं मिल पाती। फिल्म के अंत में अपने आपको सरकारी रूप में मृत घोषित कर वह भारत में अपनी बहन के साथ रह जाती है। 'मम्मो' फिल्म में आर्थिक तंगी से जूझते मध्यवर्ग की रोज़मर्रा के छोटे-छोटे प्रसंगों को संजीदगी के साथ दिखाया गया है। साथ में इस बात को उजागर किया गया है कि किस तरह सरकारी व राजनीतिक शर्तें मानवीयता को परास्त कर देती हैं। मम्मो का जीवन देश विभाजन के कारण दुखद बन जाता है।

सन 1998 में खुशवंत सिंह द्वारा लिखित उपन्यास 'ट्रेन टू पाकिस्तान' पर इसी नाम फिल्म का निर्माण किया गया। इस फिल्म में इस बात को उजागर किया गया है कि परिस्थितियाँ किस तरह से मनुष्य को ही एक दूसरे के खिलाफ कर देती है। लेकिन मनुष्य की संवेदनशीलता और धैर्य बुराई का नाश करने में सक्षम है। फिल्म की कहानी के अनुसार मनु माज़रा गाँव के लोगों में विभाजन के उपरांत भी मेल मिलाप पूर्ववत कायम था। लेकिन कुछ आतंकी आकर उन्हें संप्रदाय के नाम पर हिंसा के लिए उकसाते हैं। इस सबके

बावजूद मनु माज़रा के लोग धीरज से काम लेते हैं और मुस्लिमों को वहाँ से पाकिस्तान जाने में मदद भी करते हैं। सन् 1998 में निर्मित '1947: Earth' की कहानी बापसी सिधवास द्वारा लिखित उपन्यास 'Cracking India' पर आधारित है। फिल्म की पटभूमि है लाहौर प्रदेश, जो भारत विभाजन के उपरांत पाकिस्तानी पंजाब की राजधानी घोषित हुआ। इस फिल्म में भारत विभाजन के पहले और विभाजन के दौरान की कहानी को रेखांकित किया गया है। विभाजन की त्रासदी का वर्णन ही इस फिल्म का मुख्य उद्देश्य है। साथ ही स्वतंत्रता के बाद जनता के मोहभंग की स्थिति का सजीव चित्रण भी फिल्म का मुख्य आकर्षण है। इस फिल्म में कुछ ऐसे चरित्रों को दिखाया गया है जो स्वतंत्रता के बाद अपने धर्म परिवर्तन के लिए बाध्य हो जाते हैं ताकि उन्हें अपनी जन्मभूमि का त्याग नहीं करना पड़े। असल में यह भी भारत विभाजन की भीषण त्रासदियों में से एक है।

सन् 2001 में बनी फिल्म 'गदर: एक प्रेम कथा' भारत विभाजन की त्रासदी पर आधारित फिल्म है। इस फिल्म की कहानी प्रेम प्रसंग पर आधारित है। इस फिल्म का उद्देश्य भारत-पाक विभाजन के उपरांत आनेवाली नफरत व हिंसा की भावना को शीतलता प्रदान करना था। साधारण से सिक्ख ड्राइवर और उच्च वर्ग के मुसलमान लड़की के बीच के प्रेम संबंध को इस फिल्म में देश और काल से परे दिखाया गया है। सन् 2003 में अमृता प्रीतम के उपन्यास 'पिंजर' पर उसी नाम से एक फिल्म का निर्माण किया गया। इस फिल्म में दो ऐसी स्त्रियों की कहानी वर्णित है जिनके ज़िंदगियों में भारत-पाक विभाजन ने उथल-पुथल मचा दिया। पिंजर की नायिका अपने अतीत को भुलाकर घर-परिवार का त्याग कर पाकिस्तान चली जाती है जहाँ उसका पति मुसलमान होते हुए भी उसका साथ निभाता है। दूसरी ओर उसके भाभी को भी एक मुसलमान उठाकर ले जाता है, जिसका वह उद्धार करती है। फिल्म में स्त्री पात्रों को मुख्य भूमिका में रखकर स्त्रियों की समस्या व उनके दृष्टिकोण से विभाजन को रेखांकित करने की कोशिश की गयी है।

भारत और पाकिस्तान के बीच हुए युद्ध और घुसपैठी हमलों पर भी फिल्में बनीं। 'रिफ़्यूजी' (2000), 'एल.ओ.सी करगिल' (2003), 'लक्ष्य' (2004), 'अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों' (2004), 'क्या दिल्ली क्या लाहौर'(2014) आदि। जे.पी. दत्ता के निर्देशन में बनायीं गयीं फिल्म 'एल-ओ-सी कारगिल' में भारतीय सिपाही को पाकिस्तानी घुसपैठियों को करारा जवाब देते हुए नजर आते हैं। इसके अलावा बाकी फिल्मों की कहानियाँ प्रेम प्रसंग के इर्द-गिर्द घूमती है। 'लक्ष्य' और 'अब तुम्हारे वतन साथियों फिल्मों' में दो ऐसे युवाओं की कहानी वर्णित है जो अपने आपको प्रतिष्ठित करने के उद्देश्य से भारतीय सेना में भर्ती होते हैं किन्तु अंत तक उनमें देशभक्ति जागृत हो ही जाती है। सन् 2014 में निर्मित 'क्या दिल्ली क्या लाहौर' फिल्म की पटभूमि है सन् 1948 में भारत-पाक विभाजन के तुरंत बाद भारत-पाक सरहद पर हुई गोलाबारी की परिस्थिति। कहानी में चित्रित पाकिस्तानी सैनिक विभाजन के समय भारत से पाकिस्तान गया था जबकि भारतीय सैनिक पाकिस्तान से भारत आया था। यद्यपि अपने अपने कर्म के प्रति दोनों ही सिपाही पूर्णतः समर्पित है उनके अधिकारी उनपर विश्वास नहीं रखते। इस फिल्म में मानवीय अनुभूति को सर्वोपरि दिखाया गया है। कभी-कभी मनुष्य बाध्य होकर जीवन और जीविका के लिए अनचाहे काम तो करता है लेकिन अंत में मानवीयता और मूल्यबोध ही श्रेष्ठ साबित होते हैं। इस फिल्म में विभाजन की त्रासदी को दोनों सिपाहियों के जीवन से जोड़कर मर्मस्पर्शी रूप में प्रस्तुत करने में निर्देशक सफल हुआ है। 'रिफ़्यूजी' फिल्म में भारत और पाकिस्तान के बीच चल रहे अवैध प्रवजन को दिखाया गया है।

सन् 2004 में बनी फिल्म 'वीर-जारा' भारत-पाक संबंध पर बनी एक उल्लेखनीय फिल्म है। इस फिल्म में एक प्रेम कहानी के माध्यम से दोनों देशों के बीच जो संदेह और शत्रुता की भावना है उसे रेखांकित किया गया है। जहाँ नायक को केवल संदेह के आधार पर पूरा जीवन पाकिस्तान में गुज़ारना पड़ता है। फिल्म में बंधुत्व और भ्रातृत्व की भावना को प्रबल व प्रभावी ढंग से दिखाया गया है। नायिका पाकिस्तानी होते हुए भी यह सोचकर सारा जीवन भारत में बिताती है कि नायक की मृत्यु हो गयी है। इस फिल्म में अनेक छोटी-छोटी घटनाओं के माध्यम से यह दर्शाने की कोशिश की गयी है कि भारत और पाकिस्तान के लोग गलतफहमियों के शिकार हैं। सभी राजनीतिक या सांप्रदायिक भावनाओं से ऊपर है मानवताबोध की भावना। इसी मानवताबोध के चलते पाकिस्तानी वकील जी-तोड़ मेहनत कर नायक को वापस भारत भेजने में सक्षम

होती है। कुछ इसी तरह की कहानी को अलग ढांचे में सन् 2017 की फिल्म 'टाइगर जिंदा है' में दिखाया गया है। फिल्म में इंडियन रॉ एजेंट और पाकिस्तानी आई एस आई एजेंट के बीच संबंध को लेकर इस मनस्तत्व को उजागर करने की कोशिश की गयी है दोनों देशों की दुश्मनी आपसी गलतफहमी है और कुछ नहीं। सन् 2015 में बनी 'हम तुम दुश्मन दुश्मन' फिल्म का भी यही मूलभाव रहा, जहाँ एक कश्मीरी बच्चे को बचाने के लिए एक पाकिस्तानी और एक भारतीय सिपाही अपने सभी द्वंदों को भूलकर आगे बढ़ता है।

भारत और पाकिस्तान के बीच ऐसे मामलों की कमी नहीं है जहाँ घुसपैठिये समझकर बेकसूर लोगों को कारावास दिया गया अथवा मृत्युदंड। पंजाब के भीखिविंद के निवासी सरबजीत सिंह इस बात का उदाहरण है। सरबजीत सिंह की कहानी को लेकर सन् 2016 में ओमंग कुमार ने 'सरबजीत' फिल्म का निर्माण किया। जिसमें निरपराधी सरबजीत पर अत्याचार के नमूने पेश किए गए। लेकिन फिल्म निर्माण में निर्देशक ने इस बात की ओर भी दर्शकों का ध्यान आकर्षित किया कि दुष्ट चक्रों के अलावा ऐसे भी लोग हैं जो दोनों देशों की शत्रुता का अंत कर भाईचारे के प्रति आग्रही हैं। सन् 2015 में बनी फिल्म 'बजरंगी भाईजान' का उदाहरण इस कथन की पुष्टि करता है। फिल्म की कहानी को इस तरह से बुना गया है जहाँ एक कट्टर हनुमानभक्त हिन्दू एक पाकिस्तानी बच्ची को उसके घर वापस भेजने के लिए यथासंभव कोशिश करता है। अपने उसूलों की कुर्बानी देकर वह अपने उद्देश्य में कामयाब होता है लेकिन पाकिस्तानी पुलिस के हाथों बंदी बन जाता है। तब पाकिस्तानी जनता एकजुट होकर प्रशासन के खिलाफ लड़ते हुए उसे उसके घर वापस भेजते हैं। दोनों देशों के आम जनता की इच्छा को ये फिल्म रेखांकित करती है। इसी तरह के विषय पर आधारित अन्य एक फिल्म है सन् 2016 में बनी फिल्म 'हेप्पी भाग जाएगी'। इस फिल्म की नायिका भी गलती से पाकिस्तान पहुँच जाती है जहाँ उसे पाकिस्तान के एक ऊंचे घराने से सहारा मिलती है और उन्हीं की मदद से वह सकुशल घर वापस आ पाती है। इसी तरह इन फिल्मों में दोनों पड़ोसी देशों के बीच सौहार्द के संपर्क को दिखाया गया है।

भारत-पाक विभाजन की त्रासदी पर बनी फिल्मों में अनेक छोटे-बड़े किरदारों के माध्यम से विभाजन की त्रासदी पर प्रकाश डाला गया है। इनमें ऐसी अनेक छोटी-बड़ी घटनाओं को प्रस्तुत किया गया है जिनसे यह सिद्ध हो जाता है कि विभाजन से सबसे अधिक साधारण जनता को ही क्षति पहुंची है। विभाजन साधारण जनता की इच्छा बिल्कुल नहीं थी। सांप्रदायिक कट्टरता को विभाजन ने अधिक शक्तिशाली बना दिया जिसका दुष्प्रभाव आज भी दोनों देशों को भुगतना पड़ रहा है। गौर से देखा जाय तो इन फिल्मों में मुख्य रूप से धार्मिक कट्टरता या सांप्रदायिकता पर मानवीयता की विजय को दिखाया गया है। लेकिन इसका मूल्य भी लोगों को जान देकर चुकानी पड़ रही है। सन् 2017 में निर्मित फिल्म 'बेगम जान' की कहानी रेडक्लिफ लाइन खींचने के उपरांत दोनों देशों के बँटवारे में आयी समस्याओं को उजागर करती है। सन् 1947 में सर सीरिल रेडक्लिफ द्वारा हिंदुस्तान और पाकिस्तान के विभाजन के उद्देश्य से जो सीमारेखा खींचीं गयी वह व्यावहारिक नहीं थी। फिल्म की कहानी के अनुसार रेद्क्लिफ लाइन बेगम जान के घर के बीच से गुजरती है, जिस कारण बेगम जान का घर जला दिया जाता है। इस फिल्म में संवेदनशील रूप में विभाजन की त्रासदी को दिखाया गया है। फिल्म में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि विभाजन से साधारण लोगों का कोई वास्ता नहीं था। कुछ लोग विभाजन का नाजायज फायदा उठा रहे थे और व्यक्तिगत लाभ के लिए हिंसा कर रहे थे।

भारत और पाकिस्तान के संबंधों को लेकर हास्य धर्मी हिंदी फिल्मों का भी निर्माण किया गया है। सन् 2013 में बनी फिल्म 'वार छोड़ ना यार', 2014 में बनी 'टोटल स्यापा', 2015 में बनी 'बॅगिस्तान' आदि फिल्में इस बात का उदाहरण है। इन फिल्मों में व्यंग्य के माध्यम से दोनों देशों के कटु संबंधों को सामने लाकर उन्हें नकारा गया है। फिल्मों के माध्यम से यह दिखाने की कोशिश की गयी है कि दोनों देश आपसी संबंधों को लेकर गलतफहमियों के शिकार हैं जिसे मिटाना असंभव नहीं है।

भारत-पाक संबंधों को मूलाधार बनाकर निर्मित फिल्मों के अलावा ऐसी भी अनेक फिल्में हैं जहाँ कहीं दोनों देशों के बीच के संबंध का उल्लेख भर मिलता है। उपकार(1967), 'मैं हूँ ना'(2004), 'एक था टाइगर'(2012) आदि फिल्में इस बात का उदाहरण है। सन् 2014 में बनी फिल्म 'पी.के.' में भी भारत

पाकिस्तान के बीच के कटु संबंध को मिथ्या प्रचार के रूप में उपस्थित किया गया है। जिससे यह सिद्ध किया गया है कि दोनों देशों की जनता के मन में बेकार ही संदेह और अविश्वास फ़ैले हुए हैं।

हिंदी सिनेमा में भारत विभाजन और उसके प्रभावों को अलग-अलग दृष्टिकोण से अवश्य प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इनकी मूल संवेदना एक ही है। जहाँ रिश्तों की कड़वाहट, अविश्वास, मूल से बिछड़ने का दु:ख, सांप्रदायिक दंगे, आतंकवाद और युद्ध आदि का वर्णन किया गया है। भारत-पाक विभाजन पर बनी फिल्मों की शृंखला में बदलते समय के साथ-साथ फिल्मों की कहानियों और उपस्थापन शैली दोनों में काफी बदलाव देखे जा सकते हैं। इस संबंध में एक आलोचक ने लिखा है- "सन् 1947 के भारत और पाकिस्तान, दोनों जगह बनने वाली ज़्यादातर विभाजनोत्तर फिल्मों में बार-बार दोहराए जानेवाले विषय किसी एकल परिवार के भीतर या प्रेमियों के बीच के अलगाव हैं- इन दोनों को विभाजन के दौरान जमीन और जनता के बँटवारे के रूपक की तरह पढ़ा जा सकता है। इस तरह 'राष्ट्र के रूप में परिवार' का रूपक जो विभाजन फिल्मों में केंद्रीय है दर्शकों के तादात्म्य को उकसाता है। विभाजन के पहले का रूमानी दौर, राजनेताओं पर दोषारोपण व्यक्तियों की वीरता, प्यार की जीत, विभाजन के हिंसक और खूनी दृश्य ये विभाजन-फिल्मों की कुछ कथानक रूढ़ियाँ हैं।"[1] भारत-पाक संबंधों को आधार बनाकर निर्मित पहले की फिल्मों में विभाजन की त्रासदी को जिस रूप में अंकित किया गया, वह बहुत ही मर्मस्पर्शी है। लेकिन कश्मीर मुद्दों को लेकर आतंकवाद और युद्धों ने जब ज़ोर पकड़ा तो फिल्मी कहानियों का रुझान भी उसी तरफ गया। कहानियों में पाकिस्तान से प्रायोजित आतंकवादी हमलों के पीछे भारत में घटित मुंबई हमले, दिल्ली हमले का हाथ रहा। इन फिल्मों में अविश्वास और घृणा की भावना अधिक प्रभावी रही।

भारत-पाक संबंधों पर निर्मित फिल्मों को ऐतिहासिक फिल्मी विधा कहा जा सकता है। इतिहास के साहचर्य में कल्पना के मिश्रण से भारत-पाक संबंधों पर फिल्मों का निर्माण किया गया। इस विधा के फिल्मों में आरंभिक दौर के फिल्मों से ज्यादा समकालीन फिल्मों में व्यावसायिकता अधिक देखने को मिलती है। इसलिए इन फिल्मों में अधिकाधिक 'मेलोड्रामा' का प्रयोग करते हुए पश्चिमी अभिव्यंजना पद्धति को अपनाया गया है। जहां अंत कभी-कभी दुखात्मक और प्रश्नसूचक होता है। सिनेमा का मुख्य उद्देश्य है मनोरंजन। भारत-पाक संबंध पर बनी फिल्मों की यह विशेषता है कि यह आम जनता के मनोभाव को उजागर करती है न कि किसी ठोस तथ्य को। इन फिल्मों में समाज के मानसिक दशा का यथार्थ चित्रण किया गया है। भारत-पाक संबंधों पर बनी प्रायः सभी फिल्में यह संदेश लोगों तक पहुंचाती है कि विभाजन से कभी किसी का भला नहीं हुआ। आतंकवाद और सांप्रदायिक दंगे सभी के लिए हमेशा हानिकारक रहे हैं। अपनी सृजनातमक शक्ति से ये फिल्में मनुष्यता और भ्रातृत्वबोध का प्रचार करने में सक्षम हैं। इन फिल्मों ने भारत और पाकिस्तान के विभाजन के राजनीतिक फैसले पर एक प्रश्नचिह्न भी छोड़ा है।

संदर्भ:

1. विश्वनाथ, गीता एवं मलिक, सलमा (2019). लोकप्रिय सिनेमा के जरिये 1947 का पुनरीक्षण: भारत और पाकिस्तान का एक तुलनात्मक अध्ययन. *आलोचना,* अप्रैल-जून 2019. पृ. सं- 102

सहायक ग्रंथ सूची:

1. गुप्त, डॉ. चन्द्रभूषण (2012). *सिनेमा और इतिहास.* शशि प्रकाशन, गाजियाबाद, प्रथम संस्करण.
2. जोशी, ललित (2012). *बॉलीवुड पाठ.* वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण.
3. पारख, जवरीमल्ल (2012). *साझा संस्कृति सांप्रदायिक आतंकवाद और हिंदी सिनेमा.* वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण.
4. ब्रह्मात्मज, अजय (2012). *सिनेमा समकालीन सिनेमा.* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण.
5. रे, सत्यजित (2007). *विषय चलचित्र.* रेमाधव पब्लिकेशन्स, नोएडा, प्रथम संस्करण.
6. शुक्ल, प्रयाग (2017). *जीवन को गढ़ती फिल्में.* अनन्य प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण.

●